International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 426-427

नारी अन्तर्मन की व्याख्या है : मील के पत्थर

Sunila
Ph.D. Student, OPJS University, Churu, Rajasthan, India

प्रस्तावना

'मील के पत्थर' डा0 रजिन्दर कौर का छटा काव्य संग्रह है जो वर्ष 2002 गायत्री प्रिन्टर्स, बाबा नगर, नाचाराम, (हैदराबाद) तेलंगाना से प्रकाशित है। इससे पूर्व में 'अनछुई', 'रूह का वस्त्र', 'पुनर्जन्म', 'जित्थे–सा खेडदे' और 'गीली लकड़ी' प्रकाशित काव्य संग्रह हैं। एक सौ बत्तीस पृष्ठ के इस संग्रह में तेरी, चिट्टी, प्रश्न, कि तुमने पूछा, यादों की चादर, शर्त, शहनशाह, क्षणिकाएँ, जिंदगी, पत्र, बन के आईना, कैनवास, फिर साज सजाने लगे, साक्षी, बहुत कहा जिंदगी ने, पहरेदार मौन के, वर्जित फल, हस्ताक्षर, सिद्दी, जन्मों के सूरज, मुजरिम, रेत, नाम तेरा, एक तस्वीर, वजूद, सारहीन, सच बोल दिया, प्रश्न चिह्न, नुमाईश, ख्वाब, ख्याल मेरे आस पास, संदेश वाहक, सवाल, जन्म दर जन्म, कि हर मौसम, ओए बुत तराश, महबूब, मेरा तो माही तू, वाकिफ हूँ, बिखरे है तेरी ख्वाहिश बिना, प्रश्न एक कहानी सहित तैंतालीस कविता संग्रहित हैं। ''मूलतः पंजाबी भाषी रजिन्दर में हिन्दी, अंग्रेजी और तेलुगू भाषाओं की अद्भुत ताकत है किन्तु व्यवस्था में रहते हुए मात्र सवाल उठाना ही कोई कमाल नहीं है बल्कि सवालों के बीच जवाब बनाना भी एक जरूरत है। प्रश्नों की कहानी रचने वाली रजिन्दर स्वयं नारी अर्न्तमन का एक प्रश्न मानती है।''[1] उनका मानना है, ''जिंदगी की रवानगी में वक्त के हर महीन कण के रूबरू अपने आप को सवाल के रूप में पाया। प्रश्नों की गहराई में उतरते जीवन समाज के रहस्य उजागर हुए। अपनी राह चलते जो हुआ गुजरा उसी को मैंने मील का पत्थर माना, पड़ाव, ठहराव फिर चलती रही जिंदगी देती रही नाम, अनजाने खोजती रही जवाब, हाथ में लकीरें और कलम बस।''[2]

''मील का पत्थर, की कविताएँ इन बातों को उजागर करती कि स्त्री लेखन महज स्त्री लेखन नहीं होता, उसमें स्त्री के वे अहसास होते हैं जो उसने इस पल, प्रति पल दोहरी या कई तिहरी जिंदगी जीते हुए पाए हैं। उन चीजों को साहित्य में भोगा हुआ यथार्थ कहा जाता है जिनको लेखक स्वयं कवयित्री ने भोगा है।''[3]

प्रश्नों को लेकर कवयित्री का कहना हैः–

''प्रश्नों के रंगमंच
नाटकतत्व,
विद्यालय,
मदिरालय
प्रश्नों की बेहोशी मदहोशी
प्रश्नों का बहकना,
बहक कर गिरना,
सम्भलना
प्रश्नों का धर्म–देवालय
प्रश्नों के अस्तित्व, क्रिया कलाप''[4]

कवयित्री ने नारी अन्तर्मन का जिक्र करने से पहले, उसके मन के चारों ओर के प्रश्नों का जिक्र किया है। इसके माध्यम से यकीनन स्त्री मन की भीतर की सतह को एक गति मिलती है। यह हिन्दी कविता के लिए नया विषय नहीं है। हाँ, नया प्रस्तुतीकरण अवश्य है। यहाँ लेखिका के अपने मानदंड है, अपनी संवेदना है, अपना शिल्प है, और अपने शब्द हैं। प्रख्यात साहित्यकार निर्मल वर्मा ने लिखा है, ''हर रचना अपनी परिभाषा लेकर खुद चलती है, इसलिए उसे सामान्य या सर्वजन की परिभाषा में बाँधना असम्भव जान पड़ता है।''[5] इस संबंध में भूमिका में लेखिका स्वयं स्वीकारती, ''मैं आपके सामने रूह का वस्त्र लेकर उपस्थित हूँ, मैंने निश्चय ही, युग निर्माता तुलसी की भाँति रघुनाथ गाथा तो नहीं गाई है, शायद आज का समय उसके अनुकूल भी ना हो, परन्तु जो भी कुछ रख पाई हूँ, परिवेश का आधार है और स्वान्तसुखाय अवश्य है, मानव हूँ, लोभ नहीं जाता, इच्छा है, समानधर्मी होने के नाते, हो न–हो मेरी यह रचना स्वान्तसुखाय भी सिद्ध हो और मेरे सुख दुख को व्यापक आधार मिले।''[6] सामाजिक दृष्टि में नारी जीवन बड़ा सरल और साधारण परन्तु नारी का अर्न्तमन उसे वैवाहिक बंधन के बाद क्या मानता है। प्रस्तुति प्रस्तुत हैः–

''अब तो कई विकल्प हैं
किन्तु .....
माँ मुझे वो तेरी रोटी याद है।''[7]

पुरूष प्रधान समाज में पुरूष के अहंवादी दृष्टिकोण व संस्कारों के वर्चस्व को झेलती नारी शायद संवेदन शून्य हो चुकी है, वह मानती है कि विधाता ने उसके भाग्य में शायद सहना लिखा है। इस संदर्भ में कवयित्री की कलम लिखती हैः–

''जिंदगी की खुली किताब से
कुछ अनुच्छेद, कुछ वाक्य पढ़
संदर्भ सहित व्याख्याएँ करने लगती हूँ
हैरान हूँ .....
किस तरह बदल जाते हैं संदर्भ
भिन्न हो जाती हैं व्याख्याएँ
धूप छाया
संबध संबोधन
तरह मौसम
जिंदगी की किताब
मौसमी है।''

एक अन्य कविता और प्रस्तुत है। इसका शीर्षक है 'साक्षी'।

''मेरी उदासियों के साक्षी

जरूरतों के दावेदार
ओ! मेरे मन
कहाँ है जिंदगी?
जिंदगी की तरह।
बनकर कोई
क्यों ले गया
सहूलतें
महोबतें
और पास आने के पल.....।''

यह 'साक्षी' शीर्षक की कविता महानगर की बढ़ती आबादी घटते रिश्तों की परिभाषा के बीच पिसती नारी की स्थिति का चित्रण है। कहने वाली बात यह है कि इस कविता में दरकते रिश्तों को पकड़ कर बैठी हुई नारी वास्तव में समाज बहुत बड़ी तादात में है। नारी अन्तर्मन की कोई चाह नहीं है। 'मील के पत्थर' के अध्ययन के पश्चात यह बात स्पष्ट हो जाती है कि औरत का अन्तर्मन जमीनी भाव है। जमीन से किसान का गहरा नाता है। जमीन जब छिनती है या सूखती है तो किसान आत्महत्या कर लेता है। सावन या सम्मत में किसान के सपने कुलांचे भरने लगते हैं। इसके विपरीत कुछ भी हो जाता है तो किसान का दिल बैठ जाता है। यह कवयित्री के लिए संवेदना की पृष्ठभूमि बन जाती है और उसका हृदय जल उठता तथा कलम मचल उठाती है। कविता के रूप में कागज पर शब्द चित्र उकर आ जाते हैं।

''अब तुम हार जाओ
खुरदरे मेरे हाथों से
नजाकत तलाशते
तुम से सहन नहीं होगा।
मेरी फटी बिवाइयों की पीड़।
कितने वर्ष तो चलती रही
पाँव ही तो थे
सफर ने हदे तोड़ दी
राह दर राह
तय करती गई
थक गई
मेरे मुँह से तेरा नाम सुनने का ठरक
अभी गया नहीं
लिखती तो रही थी
दरवाजों खिड़कियों पर
बेशक मौसमी लगती थी झड़ी
फिर दीवारों के भटकते रंग
तुमने कहा मोहबत है
समुन्दर की आड में बेशक मिलते रहे
धरती और आकाश तो क्या?
रूह किस धोरषे में ढलान से उतर गई''[8]

अस्तु, संवेदना के सागर में खूब तह तक उतरने के पश्चात कवयित्री डॉ0 रजिन्दर कौर ने नारी की वस्तु–स्थिति को खूब उजागर किया है। यह संवेदना कवयित्री की बौखलाहट नहीं उसका, अहसास और उसका आंकलन है। यह भावुक हृदय एवं बुद्धि का समश्रिण है। पेशे से कार्यालयी हैं और शिक्षा स्तर डी. लिट्. का है, पर भावुकता कही न कही ज्यादा असरदार होती है। यह भी सत्य है कि कवयित्री के अपने यथार्थ कितने सच्चे हो या प्रामाणिक हो, जब उसकी मौलिकता दूसरे की मौलिक नहीं बनती तब तक वह यथार्थ वह धीरे–धीरे अपनी सच्चाई खो देता है। यहाँ शब्द के लिए अर्थ ढोने का रेडू बन जाते है। इस संदर्भ में मायके वस्की का कथन उदाहरण के रूप में, ''जहाँ कही–कही आँसू गिरते है, मैं सूली पर लटक जाता हूँ।''[9] प्रस्तुत है।

''हर जख्म को मरहम.....?
होते है कई जख्म
वक्त के मोहताज भी।''[10]

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी मिलाप, हैदराबाद, 24.10.2004
2. मील के पत्थर, डॉ0 रजिन्दर कौर भूमिका से
3. हिन्दी मिलाप, हैदराबाद, 24.10.2004
4. मील के पत्थर, डॉ0 रजिन्दर कौर भूमिका से
5. परिन्दे, निर्मल वर्मा भूमिका से
6. मील के पत्थर, डॉ0 रजिन्दर कौर भूमिका से
7. रूह का वस्त्र, डॉ0 रजिन्दर कौर – 23
8. मील के पत्थर, डॉ0 रजिन्दर कौर – 73
9. हिन्दी दैनिक ट्रिब्यून चण्डीगढ़ 27.10.1993
10. पुनर्जन्म की आधार शिला डॉ0 रजिन्दर कौर – 17